गुप्तकालीन भारत में व्यापारी संगठनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 संजय कुमार

गुप्त काल में व्यापार के स्पष्ट दो रूप थे। एक का नियंत्रण श्रेष्ठि करते थे। उनकी दूकान नगरों और ग्रामों में प्रायः सभी जगह होती थी। सार्थवाह एक स्थान से दूसरे स्थान तक आते–जाते थे और इस प्रकार वे देश–विदेश का माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का काम करते थे। इस प्रकार वे यातायात के व्यवस्थापक और थोक व्यापारी दोनों का काम करते थे।

गुप्त काल में व्यापारिक संगठन का प्रचलन था। संगठन के लिए नियम बने हुए थे। इन्ही नियमों के तहत संघ अपना अपना व्यापारिक कार्य सम्पन्न करते थे। वास्तव में गुप्त काल भारत के इतिहास का स्वर्ण युग था।